[श्रीकंवर लाल गुप्त]

करने की एक साजिश है । अगर उन में थोड़ी सी भी आत्मा है, मारल करेज है तो वह पब्लिक अपालोजी दें । यह मेरी मांग है (व्यवधान) । शोर मचाने से कुछ नहीं होगा (व्यवधान) वर्किंग कमेटी ने इस को मान लिया है, और यह लोग भी उस में शामिल थे, कि यह गलत चार्जेज हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं हैरान हूं । हम आदी बन गये हैं कि जो चीज चल रही है अमन चैन से उसको खामख्वाह एक चीज ला कर. .

श्री कंवरलाल गुप्त : क्या मेरी पार्टी के खिलाफ इस तरह से चार्जेज लगाये जा सकते हैं ? कांग्रेस पार्टी ने खुद मान लिया कि यह गलत चार्जेज हैं । इस तरह से कैसे हो सकता है ?

MR. SPEAKER: Shri Gupta came to my Chamber. He brought a motion and I disallowed it. Whatever questions arise between one party and another or in the Congress Working Committee or in the Jan Sangh Committee cannot be raised in this House. He said that inspite of my ruling he would raise it... (*Interruptions*) This is an unhealthy practice. He said that it would be better to give him five minutes as he would otherwise waste half an hour. He may waste the whole day; I will not allow him. He has done this despite that. I am very sorry. Why should it be like this?

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—*Contd.*

BURNING OF AL-AQSA IN JERUSALEM—*contd.*

श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी (श्रीमगर): खड़े हुए ।

अध्यक्ष महोदय : काल अटेंशन पर पांच मेम्बरों के नाम आ सकते हैं । बख्शी साहब ने बड़ी दरख्वास्त से मुझ को लिखा है कि अल अक्सा मस्जिद का बड़ा जजबाती मसला है । इसलिये मैं रूल को थोड़ा सा इधर उधर करता हूं । वह दो एक मिनट में जो चाहे कह सकते हैं ।

श्री गुलाम मुहम्मद बख्शी : अध्यक्ष महोदय मेरे दीगर साथियों ने मस्जिद अक्सा के जलाये जाने के सिलसिले में जो कुछ कहना था वह कहा । यह महज मुसलमानों के आलम का मसला नहीं है बल्कि तमाम इन्सानियत का मसला है । खास तौर पर हिन्दुस्तान के पचास करोड़ इन्सानों का जिन्होंने मजहबी रवादारी को सिर्फ हिन्दुस्तान तक ही महदूद नहीं रखा बल्कि उस से बाहर भी उस को रक्खा जहां जिस मजहब पर वार हुआ वहां हिन्दुस्तान आगे रहा । इस सिलसिले में हकूमत हिन्द की पालिसी इजराइल के हमले से आज तक जो रही है वह यकीनन काबिले मुबारकबाद है । इसी नाते मैं महज मुसलमान की हैसियत से नहीं बल्कि एक हिन्दुस्तानी के नाते मस्जिद अक्सा के जलाये जाने की मजम्मत करता हूं । यह एक ऐसी चीज है जिस को यहूदी अच्छी तरह से जानते हैं कि मुसलमान मक्का और मदीना के बाद मस्जिद अक्सा को मुतबर्रक मानते हैं और करोड़ों इन्सानों का यह पहला किब्ला था । मैं समझता हूं कि जान बूझ कर यह साजिश हुई महज यरूशलम में नहीं बल्कि तमाम दुनिया में आग भड़काने के लिये और वह आग भड़क उठी । उस में इजराइल आज तक कामयाब हुआ । लेकिन मैं यह भी अच्छी तरह से जानता हूं कि आखिर में उन को शरमिन्दा होना पड़ेगा ।

लेकिन दूसरी बात जो इजराइल ने की कि एक गैर-मुल्की बनशिन्दे आस्ट्रेलिया के रहने वाले के ऊपर जो किसी चार्टर आफ वार के साथ ताल्लुक रखता है अपने ऊपर से यह इल्जाम उठा कर डाल दिया और

इस तरह से ईसाइयत की दुनिया पर डाल दिया यह भी उन की एक सयासी चाल है । गवर्नमेंट ग्राफ इंडिया जो कुछ कर रही है वह कर रही है लेकिन इतना ही काफी नहीं है । मैं जानता हूं कि इस मामले में जो उनका रवैया या पालिसी रही है वह काफी सताई की है लेकिन इस वक्त और ज्यादा करना है क्योंकि ग्राप देख रहे हैं कि हिन्दुस्तान भर और बाकी मुमालिक में इस वक्त जज़बात कैसे उभर रहे हैं ।

मैं मामूली सी दो तीन चीजें कहना चाहता हूं । जहां तक यरूशलम का ताल्लुक है गवर्नमेंट ग्राफ इंडिया कोशिश करे अपने रिप्रेजेन्टेटिव के जरिये या अगर हो सके तो हमारे फारन मिनिस्टर खुद यरूशलम जायें कि उस को वही स्टेटस मिले जो उन को पहले हासिल था । जहां तक मस्जिद जलाने का ताल्लुक है। आज हालत यह है कि चोर भी वही जलाने वाला भी वही और जज भी वही । मैं जो इन्क्वायरी हो रही है उस से कतअन इत्तफाक नहीं करता हूं । इस लिये कोशिश की जाय कि किसी इंटरनेशनल इदारे के जरिये इस की तहकीकात हो जिस से दुनिया के सामने सही बात आ जाय कि कल्प्रिट कौन है और किस ने यह किया या कि यह लम्बी चौड़ी साजिश है । तीसरी बात मैं यह अर्ज करूंगा कि अगर हो सके तो पलियामेंट के चार पांच मेम्बरों को इजाजत दी जाय—मैं सिर्फ मुसलमान ही नहीं कहता—चार पांच पालिया-मेंट के मेम्बरों को वहां जाने दिया जाय जो कि खुद अपने खर्चे पर जायेंगे— जो कि जा कर देख लें कि हकीकत क्या है और तमाम दुनिया के सामने यह बात आये ।

(شری غلام محمد بخشی : ادھیکش مہودے- میرے دیگر ساتھیوں نے مسجد الاقصیٰ کے جلائے جانے کے مسئلہ میں جو کچھ کہا - یہ محض مسلمانان عالم کا مسئلہ نہیں ہے - بلکہ تمام انسانیت کا مسئلہ ہے - خاص طور پر ہندوستان کے پچاس کروڑ انسانوں کا جنہوں نے مذہبی رواداری کو صرف ہندوستان تک ہی محدود نہیں رکھا بلکہ اس سے باہر بھی اس کو رکھا - جہاں جس مذہب پر وار ہوا وہاں ہندوستان آگے آگے رہا - اس سلسلہ میں حکومت ہند کی پالیسی عزرائیل کے حملہ سے آج تک جو رہی ہے وہ یقیناً قابل مبارکباد ہے-

اس ناتے میں محض مسلمان کی حیثیت سے نہیں بلکہ ایک ہندوستانی کے ناتے مسجد الاقصیٰ کے جلائے جانے کی مذمت کرتا ہوں - یہ ایک ایسی چیز ہے جس کو یہودی اچھی طرح سے جانتے ہیں کہ مسلمان مکہ اور مدینہ کے بعد مسجد الاقصیٰ کو متبرک مانتے ہیں اور کروڑوں انسانوں کا یہ پہلا قبلہ تھا - میں سمجھتا ہوں کہ جان بوجھ کر یہ سازش ہوئی محض جروسلم میں نہیں بلکہ تمام دنیا میں بھڑکانے کے لئے - اور وہ بھڑک اٹھی - اس میں عزرائیل آج تک کامیاب ہوا - لیکن میں یہ بھی اچھی طرح سے جانتا ہوں کہ آخیر میں ان کو شرمندہ ہونا پڑے گا -

لیکن دوسری بات جو عزرائیل نے کی کہ ایک غیر مسلم باشندے - آسٹریلیا کے رہنے والے کے اوپر - جو کسی چارچ آف وار کے ساتھ تعلق رکھتا ہے - اپنے اوپر سے یہ الزام اٹھا کر ڈال دیا - اور اس طرح سے عیسائیت کی دنیا پر ڈال دیا - یہ بھی ان کی ایک سیاسی چال ہے - گورنمنٹ آف انڈیا جو کچھ کر رہی ہے وہ کر رہی ہے - لیکن اتنا ہی نہیں ہے - میں جانتا ہوں کہ اس مسئلہ میں جو ان

[بخشی غلام محمد]
کا رویہ یا پالیسی رہی ہے وہ کافی ستائش کی ہے - لیکن اس وقت اور زیادہ کرنا ہے - کیونکہ آپ دیکھ رہے ہیں کہ ہندوستان بھر میں اور باقی ممالک میں اس وقت جذبات کیسے ابھر رہے ہیں -

میں معمولی سی دو تین چیزیں کہنا چاہتا ہوں - جہاں تک جروسلم کا تعلق گورنمنٹ آف انڈیا کوشش کرے اپنے ریپریزینٹیٹو کے ذریعہ یا اگر ہو سکے تو ہمارے فارن منسٹر خود جروسلم جائیں - کہ اس کو وہی سٹیٹس ملے جو اس کو پہلے حاصل تھا - جہاں تک مسجد جو جلانے کا تعلق ہے - آج حالت یہ ہے کہ چور بھی وہی - جلانے والا بھی وہی اور تیسری بھی وہی - میں جو زاداری ہو رہی ہے اس سے ذرہ اتفاق نہیں کرتا ہوں - اس لئے کوشش کی جائے کہ کسی انٹرنیشنل ادارے کے ذریعہ اس کی تحقیقات ہو - جس سے دنیا کے سامنے صحیح بات آ جائے کہ کلپرٹ کون ہے اور کس نے یہ کیا یا کہ یہ لمبی چوڑی سازش ہے - تیسری بات میں یہ عرض کروں گا کہ اگر ہو سکے تو پارلیمنٹ کے چار پانچ ممبروں کو اجازت دی جائے - میں صرف مسلمان ہی نہیں کہتا - چار پانچ پارلیمنٹ کے ممبروں کو وہاں جانے دیا جائے - جو کہ خود اپنے خرچ پر جائینگے - جو کہ جا کر دیکھ لیں کہ حقیقت کیا ہے اور تمام دنیا کے سامنے یہ بات آئے -]

श्री दिनेश सिंह : दो सवाल माननीय सदस्य ने किये थे । मैं सदन को यकीन दिलाना चाहता हूं कि सरकार की तरफ से पूरी कोशिश है कि इस मामले का एक सही हल निकाला जाये यरूशलम के लिये । हम काफी दिनों में इस बात की कोशिश में हैं कि संयुक्त राष्ट्र में जो भी रेजोल्यूशन हुए हैं उन्हें इज-राइल को मानना चाहिये और उसी हिसाब से वहां काम होना चाहिये । हमें अफसोस है कि इजराइल ने अभी तक उन को नहीं माना । संयुक्त राष्ट्र में जो कुछ हो सकता है उस से हम पीछे नहीं हटेंगे । जहां तक वहां जाने की बात है माननीय सदस्य जानते हैं कि वह इजराइल के आकुपेशन में है लेकिन अगर कोई माननीय सदस्य वहां जाना चाहते हैं तो हमारी तरफ से कोई ऐतराज नहीं होगा ।

श्री बलराज मधोक (दक्षिण दिल्ली) : आपने उनकी भावनाओं का आदर करते हुए उनको मौका दिया है । यह आपने एक्सेप्शन किया है । ऐसा पहले कभी नहीं होता था । उनकी भावनाओं का आप आदर कर सकते हैं तो हमारी भावनाओं का भी आपको आदर करना होगा । इन लोगों ने भारतीय जनसंघ पर आरोप लगाया था । भारतीय जनसंघ यहां का एक दल है देश की एक पार्टी है । उस चार्ज को स्वयं कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने अपने प्रस्ताव के अन्दर कहा है कि गलत है वह चीज़ गलत है । इसलिए नैतिकता का यह तकाजा है मारेलेटी का यह तकाज़ा है कि श्री फखरुद्दीन अली अहमद श्री जगजीवन राम और श्रीमती इन्दिरा गांधी यहां माफी मागें, एपोलोजी मांगे । अगर अगर उन में मारेलेटी है अगर उन में दयानत-दारी है तो यहां उनको माफी मांगनी चाहिये । वर्ना हम कहेंगे कि आप बेईमान हैं बददयानत-दार हैं और आप लोगों ने जानबूझ कर गलत बयानी की है ।

श्री कंवरलाल गुप्त : मिसचीवस चार्ज लगाया गया है, स्लांडरस चार्ज लगाया गया है । उनको आप कहें कि वे माफी मागें ।